JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण पर संचार माध्यमों के प्रभावों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 प्रशान्त सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग

राष्ट्रीय पी0जी0 कॉलेज जमुहाई जौनपुर उ0प्र0

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रुपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। वैश्वीकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के सन्दर्भ में किया जाता है। अर्थात व्यापार विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण। वैश्वीकरण का अभिप्राय है कि विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ जाना। सामाजिक, आर्थिक संबंधों का सम्पूर्ण विश्व तक विस्तार वैश्वीकरण है। वर्तमान समय में, मानव जीवन के अनेक पक्ष, जिन समाजों में हम रह रहे है, उनसे हजारों मील दूर स्थित संगठनों और सामाजिक ताने–बाने से प्रभावित होने लगे है, इस प्रकार विश्व एक एकिक समाज व्यवस्था का रुप धारण करता जा रहा है। इस संबंध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि विश्ववाद के द्वारा एक ऐसी नवीन चेतना का उदय हो रहा है कि सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्र–राज्य अब कई मामलों में एक जगह मिलजुल कर बैठ मानव जीवन को अधिकाधिक खुशहाल एवं बेहतर बनाने के लिए एक साथ निर्णय करने लगें है।

आधुनिकीकरण शब्द एक प्रक्रिया का बोध कराता है। आधुनिकीकरण से तात्पर्य सतत् एवं लगातार होने वाली क्रिया से है। साथ ही आधुनिकीकरण एक विस्तृत प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम पश्चिमी समाजों से प्रारम्भ हुआ। तत्कालीन यूरोपीय समाज में पुनर्जागरण एवं औद्योगिकीकरण के कारण पश्चिमी समाजों में तीव्र परिवर्तन स्पष्ट होने लगे इससे समाज में भिन्नता दिखाई देने लगी एक तरफ परंपरागत समाज तथा दूसरी तरफ वे समाज जिनमें परिवर्तन हो रहे थे और आधुनिक समाज के रुप में नयी पहचान प्राप्त कर रहे थे इस स्थिति ने आधुनिकीकरण को जन्म दिया। अंग्रेजीकरण ,यूरोपीकरण, पाश्चात्यकरण तथा शहरीकरण को आधुनिकीकरण के पर्यायवाची के रुप में प्रयोग किया जाता है। औद्योगिकीकरण , नगरीकरण आदि की तरह ही आधुनिकीकरण भी एक जटिल प्रक्रिया है।

आधुनिकीकरण राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवर्तन द्वारा आर्थिक विकास की ऐसी मिली–जुली पारस्परिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा ऐतिहासिक तथा समकालीन अविकसित समाज अपने आपको विकसित करने का प्रयास करतें रहते है, जहां कभी और जिस किसी संदर्भ में इसकी उत्पत्ति हुई, इसकी मूल आत्मा तार्किकता, वैज्ञानिक भावना तथा परिष्कृत तकनीकी से जुड़ी रही है। परिवर्तन की एक विशेष प्रक्रिया के रुप में आधुनिकीकरण एक विशिष्ट प्रकार की तकनीकी तथा उससे संबंधित सामाजिक संरचना,मूल्य व्यवस्था तथा आदर्श चारों का एक पुंज है, जो पारस्परिकता से भिन्न होता है।

समाजशास्त्रीय अध्ययन तब तक वास्तविक नही हो सकता जब तक उनके मानविकी पक्ष पर ध्यान न दिया जाये। समाजशास्त्र का अध्ययन वस्तु स्वयं मनुष्य उनकी सामाजिक क्रियायें तथा मनुष्य द्वारा बनाई गई संस्कृति और उस पर आधारित संरचना है। इन सभी में

मानवीय तत्वों का समावेश है, समाजशास्त्रीय अध्ययन में वैज्ञानिक और मानविकी पक्षों का मिश्रण होने से ही समाजशास्त्र को अधिक उपयोगी और व्यवहारिक बनाया जा सकता है।

आज का युग संचार प्रौद्यौगिकी का युग है, जहां पर उदारीकरण, निजीकरण, ग्लोबलाइजेशन जिसे संक्षिप्त में एल0पी0जी0 का नाम देते है, का प्रभाव प्रमुख रुप से भारतीय समाज पर पड़ रहा है जिससे वस्तुओं और सेवाओं का आयात–निर्यात निर्वाध गति से हो सके।

वैश्वीकरण का भारत पर प्रभाव यह रहा है कि हम अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जुड़ गए और जनसंचार के माध्यम से दुनिया के अधिकांश देशों के व्यापार में अपना सहयोग प्रदान करने लगे। विकसित से विकासशील देशों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सम्भव होने से उनकी पूंजी की समस्या का समाधान सम्भव होता जा रहा है तथा ऋणग्रस्तता भी नही बढ़ रही है। वैश्वीकरण के कारण भारत जैसे विकासशील देश के उत्पादों हेतु बाजार की उपलब्धता बढ़ाने के साथ साथ अच्छी गुणवत्ता वाली उपभोग की वस्तुएं इन्हे कम कीमत पर उपलब्ध हो रही है। वैश्वीकरण से लोगों के विचार अनुभवों एवं जीवन शैलियों को परस्पर साझा कर रहे है। वैश्वीकरण से प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है, जिससे घरेलू उद्योंगों की कार्यकुशलता भी बढ़ती है, वैश्वीकरण से उत्पादन लागत में कमी होती है जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत में कमी होती है, इस प्रक्रिया में सबसे अधिक लाभ उपभोक्ता वर्ग को हो रहा है।

वैश्वीकरण के कारण आज शिक्षा के क्षेत्र में भी एक क्रांति आई है, जिसके कारण नई–नई शैक्षिक तकनीकियों का शिक्षा मे समावेश किया जा रहा है। पहले शिक्षा व्याखान विधि के द्वारा निश्चित पाठ्यक्रम के आधार पर दी जाती थी। आज वही पर यह शिक्षा प्रोजेक्टर, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के आधार पर प्रश्नोत्तर विधि, प्रदर्शन विधि आदि के आधार पर दी जाने लगी है। मार्शल मैकलुहान ने कहा है कि इलेक्ट्रानिक संचार व संपूर्ण संचार को एक सूत्र में बांध दिया है, इस तरह दुनिया भर के लोग टेलीविजन द्वारा प्रसारित खबरो और घटनाओं के साथ–साथ वैश्विक स्तर के समाज पर पड़ा है। वैश्वीकरण के इस युग में हम एक दूसरे के पास आ गए और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ,व्यापारिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, आदि सभी क्षेत्रों में एक दूसरे से परिचित हुए हैं। इसी परिचय की वजह से आर्थिक क्रियाओं में परस्पर निर्भरता बढ़ी, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला। यहां पर वैश्वीकरण को हम ''वसुधैव कुटुम्बकम्'के सूक्ति भी जानते और पहचानतें हैं। नये स्थान और समय में संस्कृतियों और समुदायों के एकीकरण और उसे जोड़ने वाले तथा दुनिया को एक हकीकत तथा अर्न्तसम्बंधित बनाने वाले अर्थ में वैश्वीकरण को देखा जा सकता है।

थियोडर लेविट ने एक जगह कहा है कि हमें वैश्वीय तरीके से सोचना चाहिए और हमारे काम के तरीके स्थानीय होना चाहिए। लेविट का यह कथन वैश्विक और स्थानीय तनाव को कम करके सामंजस्य स्थापित करने का है। जार्ज सोरोस वैश्वीकरण को वैश्विक वित्तीय बाजारों को विकास अंतर्राष्ट्रीय निगम के विकास तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं पर उनके प्रभुत्व में वृद्वि के अर्थ में लेते है। गिंडेस के अनुसार वैश्वीकरण लोंगों और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के बीच बढ़ती हुई अन्योन्याश्रिताया पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है। यह पारस्परिकता, पूंजीवाद, तकनीकी और राजनीति तथा व्यापार साथ–साथ देखते हैं और जानकारी हम अपने कमरें में बैठ कर प्राप्त कर रहे हैं । मेक्लूहान का कहना है कि मीडिया ने सम्पूर्ण दुनिया को छोटा सा एक गांव बना दिया है। वैश्वीकरण के कारण अच्छी वस्तुएं बाजार में आने से एक क्षेत्र की वस्तुओं में विविधता आ रही है जिनके पास इनको खरीदने की क्षमता है उनको ज्यादा आराम मिल रहा है। वैश्वीकरण ने विभिन्न देशों के बीच विचार, विनिमय, समानता एवं परम्पराओं के विनिमय की गति मिल रही है, जिससे हमारी सोच एवं व्यवहार हो रहा है।

वैश्वीकरण के कारण हम सभी विश्व से जुड़े हुए हैं, जिससे बाजार में जब गिरावट आती है तो विश्व अर्थव्यवस्था धराशायी हो जाती है क्योंकि सभी अर्थव्यस्था एक साथ सम्बद्ध है । उदाहरण के लिए कोविड.19 महामारी के दौरान जब लाकडाउन हुआ तब अमेरिका ,चीन ,ब्रिटेन आदि विकसित राष्ट्रों के अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों मे गिरावट आयी और वर्तमान में रुस–यूक्रेन युद्ध के कारण क्रूड आयल में भारी वृद्वि होने के कारण भारत में भी पेट्रोल और डीजल के दामों में अत्यधिक वृद्धि हुई, जो महानगरों के साथ–साथ भारत जैसे कृषि प्रधान देशो को किसानो का भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा। पेट्रोल की कीमत 100 रुपये से ज्यादा और डीजल का लगभग वही के आस–पास पहुंचने से भारत के राष्ट्रीय बाजारों में इतनी मंहगाई हो गई है कि सामान्य आय, दुर्बल आय, कमजोर वर्ग, वंचित वर्ग का जीवन यापन करना दुर्भर हो गया है। वैश्वीकरण में संचार के प्रभाव से परस्पर निर्भरता, शोषण, पर्यावरणीय प्रभाव स्वदेशी उत्पादों की हानि हो रही है।

वर्तमान समय मे आधुनिकता का मानव जीवन से प्रत्यक्ष सम्बंध है। समय के बदलते स्वरुप के साथ मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं में भी परिवर्तन किया यही परिवर्तन धीरे धीरे आधुनिकता का स्वरुप लेने लगा। जहां तक भारत में आधुनिकता का विषय है वह गुलामी के समय समय ही प्रारम्भ हो गया था। जब अंग्रेज इस देश को अपने अधीन कर अपनी पश्चिमी सभ्यता की परतें इस देश के ऊपर थोपने लगे थे। आजादी के बाद देश में तीव्र गति से सामाजिक,आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन हुआ। लोगों जागरुकता बढ़ी, शिक्षा के स्तर में परिवर्तन हुआ इसको एम0एन0 श्रीनिवास ने अपनी पश्चिमीकरण की अवधारणा में विवेचित किया है। औद्योगीकरण की प्रणालियां विकसित हुई संचार एवं आवागमन के साधनों में तीव्र विकास हुआ। आज का युग संचार युग है, बिना संचार के सामाजिक जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती है। यद्यपि संचार का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मानवता का परन्तु संचार के क्षेत्र में प्रगति कुछ सौ वर्ष पूर्व और क्रांति बीसवी सदी की ही देन है।

मनुष्य का प्रारम्भिक चरण आदिम समाज का था इसलिए उसकी प्रवृत्ति आसुरी थी। जैसे–जैसे वह सभ्यता की दिशा की ओर बढ़ता गया वैसे वैसे उसकी विचारधारा और आवश्यकताओं में परिवर्तन होने लगा। उसकी अपनी अज्ञानता के प्रति जानने की स्वाभाविक वृत्ति ने अनेक नये संदर्भो की खोज की, यही आगे चलकर समाज परिवार समूह समुदाय में विकसित होती रही। सभ्यता की ऊंचाइयों की तरह बदलते उसके कदम विविध रुपों में संवरते गए। वह अपनी मूलभूत आवश्यकताओं से जुड़ा और उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नए समीकरणों को विकसित किया । समय के साथ सिर्फ आवश्यकताओं में ही परिवर्तन नही हुआ बल्कि उनकी पूर्ति में भी बदलाव आया और उसी बदलाव ने आधुनिक युग को जन्म दिया । आज विज्ञान के बढ़ते कदम धरती से लेकर आकाश तक की दूरी माप चुके हैं।

उसके साथ ही आधुनिकता की परतें भी भारतीय सभ्यता में अपनी जड़े जमा चुकी हैं। सामूहिक व्यवहार के रुप में आधुनिक जनसमूह अथवा सामूहिक घटनाओं के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों को स्पष्ट करता है। यह सामान्य से थोड़ा अलग जाने वाला प्रचलन होता है तथा किसी जनसमूह द्वारा अपनाए जाने वाला नवीन व्यवहार का प्रतिमान होता है। संचार शब्द का शाब्दिक अर्थ किसी बात को आगे बढ़ाना, चलना या फैलाना है। यह शब्द संस्कुत की मूल धातु 'च्चर' से निर्मित है जिसका अर्थ है चलना जब कोई शब्द या विचार दूसरों तक पंहुचता है तो वह संचार कहलाता है। अतः संचार की परिभाषा करते हुए कहा जा सकता है कि यह संदेश व सूचना को दूसरे तक किसी उददेश्य तक पंहुचाने की कला है। इस रुप में समाज में संचार का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि प्रारम्भ से ही मानव संचार के विविध साधनों का उपयोग और विकास करता रहा है अभी रुका नही है और ना कभी रुकेगा यह प्रक्रृति का नियम है कोई कह नही सकता कि प्रगति की दिशा कौन सी होगी ।

मनुष्य राष्ट्र और सामाजिक व्यवस्था का निर्माता भी है और उपभोक्ता भी । वह समाज को बदलता भी है और समाज के सांचें में खुद ढ़लता भी है। हमारा मौजूदा युग अथवा भारतीय समाज अपनी प्रचीनतम समृद्ध धार्मिक आध्यात्मिक प्राकृतिक परम्पराओं का पोषण करता हुआ साथ ही उससे पोषित होता हुआ आज जिस मुकाम पर खड़ा दिखाई दे रहा है वहो से आधुकिता की सारी राहें खुलती है। इस कालखण्ड को संक्रमण का युग, सूचना विस्फोट का युग, बाजारवाद का युग मशीनयुग , उपभोक्तावादी युग विज्ञापन का युग,महिला सशक्तिकरण का युग, जनंसख्या विस्फोट का युग , वैश्वीकरण का युग, एटम युग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी युग आदि अनेक संज्ञाओं से सम्बोधित किया जा रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विकासशील भारत विकसित देशों के साथ कदमताल करने के लिए निरन्तर अग्रसर है। पिछले लगभग तीन दशकों में भारतीय समाज बड़ी तेजी से पश्चिमोन्मुख हुआ है। आर्थिक,राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रुप से हम पाश्चात्य देशों की तर्ज पर अपना चोला बदलते आ रहे है।

भारत में आधुनिकीकरण पर जनसंचार के माध्यम का विशेष प्रभाव रहा है। भारत एक सभ्यता का समाज है, परम्पराओं ने इसे सैकड़ों वर्षों तक गढ़ा है, इसकी अपनी एक विशिष्ट पहचान है। इसका एक अपना इतिहास है। उसमें कई भाषाएं है, बोलियां है और सांस्कृतिक क्षेत्र है। यहां जब आधुनिकता आई तब इसका स्वरुप यहां की परम्परा के अनुसार ढल गया। परम्परा के प्रभाव में आकर यहां आधुनिकता का रुप ही बदल गया है, दूसरे शब्दों में यूरोप–अमेंरिका की आधुनिकता यहां आकर बदले हुए भेष में देखने को मिलती है।

वास्तव में हमारे चारों ओर जो घटनाएं एवं तथ्य है, उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि, शिक्षा का प्रसार, जनशक्ति का मानवहित में उपयोग, अर्जित प्रस्थिति को महत्व व उसकी सक्रियता में वृद्धि, आधुनिक परिवहन और संचार के साधनों में वृद्धि, चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, आजीविका उपार्जन के लिए नवीन प्रविधियों का उपयोग आदि

वे विशेषताएं है, जो आधुनिकीकरण की प्रकृति तथा क्षेत्र को स्पष्ट करती है। आर्थिक क्षेत्र में मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण और सर्वाधिक आर्थिक सम्पन्नता आधुनिकीकरण के लक्षण है। शिक्षा के क्षेत्र में परम्रागत शिक्षा के स्थान पर तकनीकी शिक्षा प्रदान करना, जिससे आत्मनिर्भर हुआ जा सके। आधुनिकीरण का संकेत है। धर्म के क्षेत्र में पुराने कर्मकांडों, यज्ञ–हवन, तपस्वी का त्याग करके अधिक से अधिक बौद्धिक और नैतिक बनाना आधुनिकीकरण की ओर बढ़ना है। पारिवारिक और सामाजिक रीति–रिवाज तथा परम्परा से युक्त प्राचीन मूल्यों, आदर्शों व मान्यताओं के स्थान पर वर्तमान आधुनिक मूल्यों का पालन करना आधुनिकीकरण है। विवाह, खान–पान एवं पहनावे की प्राचीन परम्परा के स्थान पर जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, उन्हे स्वीकार करना तथा उनके आधार पर सामाजिक संरचना का निर्माण आधुनिकीकरण है।

भारतीय समाजशास्त्रियों ने भारत में विकसित हुई आधुनिकता का विश्लेषण किया है एम0एन0 श्रीनिवास ने पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण की व्याख्या सैद्धांतिक स्तर पर की है। वे कहते है कि भारत में आधुनिकता की उपस्थिति ब्रिटिश काल से ही समझी जा सकती है, यह सही है कि अंग्रेज इस देश में व्यापारी की तरह आए पर बाद में उन्होने यहां की सत्ता को अपनाया तब उन्होने यहां अपने जड़े मजबूत करने के लिए प्रभावी प्रशासन चलाने के लिए एक विशेष प्रकार की आधुनिकता को जन्म दिया। मुद्रण के लिए प्रिंटिग प्रेस लाए, आवागमन के लिए रेलगाड़ियां लाई, संचार साधन जुटाए और इस प्रकार ब्रिटेन की आधुनिकता को यहां आरोपित किया। मैकाले द्वारा प्रस्तावित अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया। अंग्रेजी शिक्षा को उदारवादी विचारधारा को इस देश में जन्म दिया उपनिवेशवादी शासन के होते हुए इस काल में हमारे यहां उदारवाद का जन्म हुआ।

आधुनिकता का सम्बंध वैश्वीकरण से है देखा जाए तो प्रारंभिक अवस्था में वैश्वीकरण ने ही आधुनिकता को पाला–पोसा था। आधुनिकता और वैश्वीकरण का चोली दामन का साथ है।

आधुनिकता का प्रभाव चिकित्सा, शिक्षा, स्वास्थ्य पर पड़ा है। आधुनिकता की परतें भी हिन्दुस्तानी सभ्यता में अपनी जड़े जमा ली है। सामूहिक व्यवहार के रुप में आधुनिक जन समूह अथवा सामूहिक घटनाओं के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों को स्पष्ट करता है। यह सामान्य से थोड़ा अलग जाने वाला प्रचलन होता है तथा किसी जनसमूह द्वारा अनपाए जाने वाला नूतन व्यवहार प्रतिमान होता है। संचार शब्द का शाब्दिक अर्थ किसी बात को आगे बढ़ाना, चलाना या फैलाना है यह सब संस्कृत की मूल धातु चर से निर्मित है जिसका अर्थ है चलना। जब कोई शब्द या विचार दूसरों तक पंहुचता है तो वह संचार कहलाता है अतः संचार की परिभाषा करते हुए कहा जा सकता है कि यह संदेश या सूचना को दूसरे तक किसी उद्देश्य से पहुचाने की कला है। इस ग्रुप में समाज में संचार का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है यही कारण है कि प्रारम्भ से ही मानव संचार के विविध साधनों का उपयोग और विकास करता रहा है , अभी रुका नही और न ही रुकेगा यह प्रकृति का नियम है कोई नही कह सकता कि प्रगति की दिशा कौन सी होगी।

परम्परागत माध्यम ट्रेडिशनल मीडिया माध्यम अत्यंत प्राचीन रहा है। अतः हमारी संस्कृति और दैनिक जीवन का विशिष्ट तथा अपरिहार्य अंग बना गया है इसमें संचार व्यापक एवं सामूहिक स्तर पर होता है। परम्परागत माध्यम धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र के लिए अत्यन्त उपयुक्त समझे जाते है। इसके प्रमुख रुपों में लोक कला संगीत, मेंला धार्मिक आयोजन सम्मेलन इत्यादि सम्मिलित है।

मनुष्य राष्ट्र और सामाजिक व्यवस्था का नियामक भी है भोक्ता भी । वह समाज को बदलता भी है और समाज के सांचे में खुद ढलता भी है। हमारा मौजूदा युग अथवा भारतीय समाज अपनी प्राचीनतम् समृद्ध, धार्मिक, आध्यात्मिक, प्राकृतिक परंपराओं का पोषण करता हुआ साथ ही उससे पोषित होता हुआ आज जिस मुकाम पर खड़ा दिखाई दे रहा है वहां से आधुनिकता की सारी राहें खुलती है। इस काल खण्ड को संक्रमण का युग, सूचना विस्फोट का युग, बाजारवाद का युग मशीनयुग, उपभोक्तावादी युग, विज्ञापन का युग, महिला सशक्तिकरण युग, जनसंख्या विस्फोट का युग, वैश्वीकरण का युग, विज्ञान एवं प्रौदयोगिकी योग आदि अनेक संज्ञाओं से संबोधित किया जा रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत विकसित देशों के साथ मिलकर निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है पिछले लगभग तीन दशकों में भारतीय समाज बड़ी तेजी से पश्चिमोन्मुख हुआ है, आर्थिक राजनैतिक सांस्कृतिक और सामाजिक रुप से हम पाश्चात्य देशों की तर्ज पर अपना चोला बदलते आ रहे हैं।

मुद्रित माध्यम प्रिंट मीडिया छपे स्वरुप में व्यापक स्तर पर लोगों तक पहुचता है अतः केवल शिक्षित लोग ही इसका लाभ ले सकते हैं । शिक्षित जन समुदाय में इसका महत्व अत्यधिक हेता है। इसके अर्न्तगत पुस्तके समाचार पत्र, पत्रिकायें, जर्नल , विज्ञापन, पम्पलेट,

कैलेन्डर, स्टिकर इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है। इलेक्ट्रनिक मीडिया वर्तमाान समय मे सर्वाधिक सशक्त माध्यम है क्योंकि इसका लाभ शिक्षित अशिक्षित सभी लोग ले सकते है अतः इसकी पहुंच विशिष्ट से लेकर सामान्य जन तक एक समान है। इसके अर्न्तगत रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, विडियो, टेलीफोन, इंटरनेट, कम्प्यूटर, ईमेल, फैक्स इत्यादि साधन आते है प्रसार की दृष्टि से इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक और विश्वयापी स्तर का है। पश्चिमी देशों में जहां सचमुच संचार क्रांति हो चुकी है यहां बहुत सी चीजें आसान हा गई है व्यवस्था चुस्त हो गई है बहुत से कार्य बटन दबाने मात्र से सम्पन्न हो जाते है सूचनाएं तत्काल उपलब्ध हो जाती है।

निष्कर्ष–

वैश्वीकरण का दौर और संचार माध्यमों में अत्यधिक वृद्धि के कारण इसने दिन दुगनी और रात चौगनी तरक्की की है। सारांश यह है कि वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण के चक्रव्यूह ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी परिधि में ले लिया है जिसमें संचार माध्यमों ने महत्वपूर्ण योगदन दिया है। इस प्रकार निष्कर्ष के रुप में कहा जाता है कि संचार क्रांति संचार माध्यमों विशेषतः इलेक्ट्रानिक मीडिया को विशेष रुप से प्रभावित किया है। टेलीविजन का एक भाग है सेटेलाईट, तकनीकी के कारण टीवी प्रसारण का स्वरुप विश्वव्यापी हो गया है अतः उसने राष्ट्रों की सीमाओं को पार करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप धारण कर लिया है। भविष्य में यह मीडिया के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने की स्थिति में रहेगा। अतः मानव समूहों वैश्वीकरण एंव आधुनिकता पर जनसंचार का जो प्रभाव दिखाई दे रहा है वह आपस में जोड़ने का एक प्रमुख साधन है मानव समूहों में संप्रेषण एकता तथा संस्कृति की निरंतरता के संचरण का मुख्य तत्व है। संस्कृति के रुप में मानव के पास जो सामाजिक विरासत है उस सब का आधार मानवीय सम्प्रेषण का प्रमुख रुप भाषा है । मानव ने भाषा का निर्माण कर अंतःक्रिया की समस्या को हल किया है, जो जनसंचार के माध्यम का प्रभाव रहा है। इस प्रकार निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि संचार क्रांति ने संचार माध्यमों विशेषतः इलेक्ट्रानिक मीडिया को विशेष रुप से प्रभावित किया है । टेलिविजन इसी का एक भाग हैं सेटेलाइट तकनीकी के कारण टीबी प्रसारण का स्वरुप विश्वव्यापी हो गया है, अतः उसने राष्ट्रों की सीमाओं को पार करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप धारण कर लिया है। भविष्य में यह मीडिया के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने की स्थिति में रहेगा।

संदर्भ–

1. शैला एल. कोचर, वैष्वीकरण और संबंधः एक बदलती हुई दुनिया की पहचान की राजनीति, रोमैन और लिटिलफील्ड 2004 पेज 10
2. समाजशास्त्र विश्वकोष– हरिकृष्ण रावत–रावत पब्लिकेशन्स ISBN81-7033-448(9)-2010 Page-151
3. समाजशास्त्र विश्वकोष– हरिकृष्ण रावत–रावत पब्लिकेशन्स ISBN81-7033-448(9)-2010 Page-263
4. समाजशास्त्र विश्वकोष– हरिकृष्ण रावत–रावत पब्लिकेशन्स ISBN81-7033-448(9)-2010 Page-45
5. समाजशास्त्र (एक संपूर्ण पुस्तिका) प्रो0 (डॉ0))जी0 के0अग्रवाल– सेवानिवृत्त प्रोफेसर समाजशास्त्र, कुमार विश्वविदयालय नैनीताल–एसबीपीडी पब्लिशिंग हाउस Book Code 4357-2017 page 31-33
6. समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धांत डॉ0 जे0पी0सिंह–2013, पृष्ठ–675–ISBN-978-81-203-4860.8
7. वही पृष्ठ–675
8. आधुनिकता उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत एस0एल0 दोषी 2015– रावत पब्लिकेशन्स ISBN81-7033-743-7 – page 20
9. वही पृष्ठ–18
10. निगम, बी0एस0 सूचना संप्रेषण एवं समाज , भोपाल, 1994 पृ0 18
11. राजेन्द्र, जनसंचार, सं0 राधेश्याम शर्मा , चंडीगढ़, 1993, पृ0 06
12. डॉ0 डी0एस0 बघेल, भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र , कैलाश पुस्तक सदन ,भोपाल, पृ0314.320
13. प्रो0 घनश्याम धर त्रिपाठी श्रीमती आराधना सक्सेना, भारतीय समाज आस्था प्रकाशन जयपुर,पृ0 226

14. डॉ0 जी0आर0 मदन परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली, पृ0क्र 184ए एनगम, बी0एस0 पूर्वोक्त पृ0 21
15. विस्तृत विवरण के लिए देखे नायर के0एस0एस0 एवं हवाडइ, एस0ए0पर्स. पेटिक्स ऑन डेवलमेंट कम्यूनिकेशन नई दिल्ली, 1993
16. निगम,बी0एस0 पूर्वोक्त , पृ039
17. गुप्त, बृजमोहन, संचार विविध आयाम , दिल्ली, 1992, पृ0 12
18. जागरण वार्षिक , 1999 पृ0 527
19. जनसत्ता 4 मई 1997
20. देव, राहुल, संचार क्रांति एवं पत्रकारिता , सं0 पांतजली प्रेम, नई दिल्ली, 1997 पृ0 57

डॉ0 प्रशान्त सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग
राष्ट्रीय पी0जी0 कॉलेज जमुहाई जौनपुर उ0प्र0
मो0नं0– 8948268238
Email Id -prashantsingh232629@gmail.com